गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों का शिल्पगत अध्ययन एवं विश्लेषण

एम.फिल- फिल्म (नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन) सत्र:2012-2013
हेतु प्रस्तावित
लघु शोध प्रबंध की अनंतिम रूपरेखा

शोध निर्देशक

शोधार्थी

संतोष कुमार यादव
एम.फिल (फिल्म) 2013-2014
नाट्यकला एवं फिल्म विभाग अध्ययन

सिनेमा ने सभी कलाओं के गुणों व तत्वों को स्वयं में समाहित कर अपना विशिष्ट शिल्प निर्मित किया है जिसकी अपनी दृश्य-श्रव्य भाषा है। शिल्प अमूर्त अनुभूति को मूर्त करने का तरीका है कलात्मक अभिव्यति के विभिन्न माध्यमों में प्रकट होता है जिसे कलाकार कला शिल्प के माध्यम से अपनी अनुभूति को व्यक्त करता है।

रचना निर्माण में जिन उपादानों की सहायता ली जाती है वे सभी शिल्प के अंतर्गत आते हैं। पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेटोग्राफी, संपादन, साउंड डिजाइन, गीत-संगीत-नृत्य, सेट डिजाइन, ग्राफिक एवं एनीमेशन डिजाइन आदि उपादानों का समायोजित रूप सिनेमाई शिल्प के रूप में प्रस्तुत होता है। सिनेमाई शिल्प जितना उत्कृष्ट होगा विषय की प्रस्तुति भी उतनी ही प्रभावी होगी। आज फिल्म कल्पना से भी आगे रचित कहानियों को चित्रित करने में सफल हुआ है जो कि सिनेमाई शिल्प के विकास से ही संभव हो सका है। पचास का दशक श्वेत-श्याम फिल्मों के लिए जाना जाता रहा है। उस समय के सिनेमा का शिल्प आज की तुलना में बहुत ज्यादा विकसित नहीं दिखाई देता, फिर भी विषय की प्रस्तुति के लिए सिनेमाई शिल्प में उस समय अनेक प्रयोग हुए जो आज भी फिल्म निर्माता और सिनेमा के विद्यार्थियों को आकर्षित करती है। शिल्प के बदलाव का नेतृत्व गुरुदत्त ने किया और सिनेमा के शिल्प को एक नया आयाम दिया। इनकी फिल्में सिनेमाई शिल्प की बेजोड़ नमूना हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध की प्रस्तावना में 'गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों का शिल्पगत अध्ययन एवं विश्लेषण' प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत यह जानने और समझने का प्रयास किया जाएगा कि गुरुदत्त ने विषय की प्रस्तुति में सिनेमाई शिल्प के तत्वों का कहाँ और किस प्रकार प्रयोग किया है। हिन्दी सिनेमा के इतिहास में कई निर्देशक हुए जिन्होंने हिन्दी सिनेमा के शिल्पगत विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुरुदत्त शिवशंकर पादुकोण उनमे से एक ऐसे निर्देशक थे जिन्होंने एक से बढ़कर एक ऐसी फिल्मों से हमें रूबरू करवाया जो विश्वस्तरीय मास्टर पीस थी।

सिनेमा, कला एवं विज्ञान, कल्पना और यंत्र के समायोजन से विकसित ऐसी विधा है जिसमें समाज की कलायात्रा के विविध आयाम मौजूद हैं। संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य सभी कलारूप इसमें शामिल हैं। अभिनय के माध्यम से कहने की कला नाटक ने कई सदियों पहले ही दे दी थी। नाटक में जिस प्रकार से सभी कलाओं का समायोजन है उसी प्रकार सिनेमा ने भी अपने शिल्प के विकास में चित्रकला, गीत-संगीत, वास्तुकला, अभिनय आदि गुणों से प्रेरित रहा है। आज हम जिसे सिनेमा के नाम से जानते हैं वह अत्याधुनिक तकनीक के विविध उपदानों से युक्त है। इस प्रकार यह कहाँ

जा सकता है कि सिनेमा सेल्यूलाइड या टेप (सीडी) पर अंकित एक ऐसी अत्याधुनिक विधा है जो अन्य कलाओं के कलात्मक श्रेष्टतम तत्वों और गुणों को स्वयं में समायोजित करने के बावजूद अपनी अलग पहचान और शिल्प का निर्माण करता है। कैमरे द्वारा विषय को व्यष्टि और समष्टि में चित्रित करने की क्षमता, संपादन के माध्यम से स्थान और समय को आवश्यकतानुसार परिवर्तित करने की क्षमता, बैक ग्राउंड स्कोर के माध्यम से दृश्यों के भाव को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करने की क्षमता, ग्राफिक एवं एनीमेशन डिजाइन द्वारा काल्पनिक दृश्यों के निर्माण की क्षमता आदि सिनेमाई विशेषता अन्य कलाओं के तत्वों और गुणों को अपनी आवश्यकतानुसार पुन: परिभाषित करने का अधिकार प्रदान करता है। सिनेमाई शिल्प के विशिष्ट रूप के अंतर्गत पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेट्रोग्राफी, प्रकाश प्रभाव, संपादन, साउंड डिजाइन, सेट व्यवस्था, गीत-संगीत-नृत्य प्रस्तुति, ग्राफिक-एनीमेशन डिजाइन आदि उपदानों को सिनेमाई दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक है।

परिकल्पना:

भारतीय सिनेमा के इतिहास में गुरुदत्त की फिल्में अपने बेहतरीन शिल्प के लिए जानी जाती हैं। आज भी गुरुदत्त निर्देशित फिल्में सिनेमाई शिल्प की दृष्टि से विशेष महत्व रखती है। गुरुदत्त ने अपनी फिल्मों में कैमरे की गतिशीलता, प्रकाश-छाया का प्रभाव, लयबद्ध संपादन, मंच व्यवस्था, साउंड डिजाइन, गीत-नृत्य प्रस्तुति आदि सिनेमाई तत्वों का रचनात्मक प्रयोग किया है। इन फिल्मों की शिल्पगत श्रेष्ठता ही है कि आज भी सिनेमा के विद्यार्थियों के द्वारा अध्ययन की दृष्टि से उनकी फिल्में विषय सामाग्री के रूप में प्रयोग की जाती है।

गुरुदत्त की फिल्में शिल्प के साथ-साथ कथ्य की भी दृष्टि से उत्कृष्ट और प्रभावशाली हैं। गुरुदत्त निर्देशित प्रारम्भिक फिल्मों का कथ्य मुख्यत: अपराधिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। बाद में इन्होंने सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों से उभरे अमानवीय पक्षों को भी अपनी फिल्मों का विषय बनाया जिसमें काव्यात्मकता का बोध होता है। इस सफर के बीच हास्य-व्यंग का पड़ाव भी आता है। गुरुदत्त निर्देशित बाजी, जाल, आर-पार अपराधिक विषयों पर आधारित व्यावसायिक फिल्में हैं फिर भी इनमें तात्कालिक आपराधिक परिवेश और समाज में विकसित हो रहे अपराधिक संस्कृति को मनोरंजक तरीके से चित्रित किया गया है। 'मिस्टर एण्ड मिसेज 55' फिल्म के माध्यम से गुरुदत्त ने पहली बार सामाजिक मुद्दे को हास्य-व्यंग के रूप में प्रस्तुत किया है। 'प्यासा' उनकी सृजनात्मकता की उत्कृष्ठ प्रस्तुति है। यह

एक कवि के संवेदनशील समाज के ढाँचे से संघर्ष की कहानी है जो दुनिया से निराश होकर आत्मनाश की ओर बढ़ता है किन्तु अंत में वह ऐसी नई दुनिया की तलाश में निकल पड़ता है जहाँ से उसे फिर कहीं और न जाना पड़े। 'कागज के फूल' फिल्मी दुनिया की अंदरूनी सच्चाई को बयाँ करती है। यह संवेदनशील नायक विजय के आत्मनाश की कहानी है। 'साहब बीबी और गुलाम' काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत होती है। जिसकी नायिका छोटी बहू अपने स्वत्व की प्राप्ति के लिए सामंतशाही संस्कृति से संघर्ष करती हुई मृत्यु को प्राप्त करती है।

लघु शोध प्रबंध की सीमा में सभी फिल्मों पर विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण करना संभव न होने के कारण सिनेमाई शिल्प की बहुआयामी और बहुकोणीय दृष्टि से दर्शाने वाली गुरुदत्त निर्देशित फिल्में बाजी, जाल, आर-पार, मिस्टर एण्ड मिसेज 55, प्यासा, कागज के फूल, साहब बीबी और गुलाम (अब्रार आल्वी द्वारा निर्देशित किन्तु गुरुदत्त द्वारा निर्मित एवं उनके शिल्प शैली से प्रभावित) को शिल्पगत अध्ययन एवं विश्लेषण का विषय बनाया गया है। गुरुदत्त की प्रारम्भिक फिल्में बाजी, जाल, आर-पार, मिस्टर एण्ड मिसेज 55 में सिनेमाई शिल्प के तत्व पाये जाते हैं किन्तु सिनेमाई शिल्प की श्रेष्टम कृति की दृष्टि से प्यासा, कागज के फूल, साहब बीबी और गुलाम उत्कृष्ट फिल्में हैं । इन फिल्मों में सिनेमाई शिल्प की विषयगत विभिन्नता एवं प्रस्तुति की अलग-अलग रूप के चलते अध्ययन की दृष्टि से आवश्यक प्रतीत हुई जिनमें सिनेमाई शिल्प के तत्वों (पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेटोग्राफी, संपादन, साउंड डिजाइन एवं पार्श्व संगीत, गीत-नृत्य प्रस्तुति, मंच व्यवस्था) के आलोक में इनका विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा ।

यह शोध प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित किए जाने की संभावना है। **प्रथम अध्याय** में सिनेमाई शिल्प की अवधारणा एवं तत्व को दर्शाया जाएगा, साथ ही उसके तत्वों पटकथा, अभिनय प्रस्तुति, सिनेमेट्रोग्राफी, प्रकाश, संपादन, साउंड डिजाइन एवं पार्श्व संगीत, नृत्य-गीत-संगीत प्रस्तुति, सेट डिजाइन, ग्राफिक एवं एनीमेशन डिजाइन की क्रमबध्द तरीके से व्याख्या करते हुए उसकी प्रस्तुति के पक्ष को दर्शाया जाएगा।

द्वितीय अध्याय में गुरुदत्त के जीवन की चर्चा की होगी। इसे गुरुदत्त का प्रारम्भिक जीवन और फिल्मों में आने के बाद गुरुदत्त का जीवन नाम के दो उपअध्यायों में विभाजित किया गया है। इसमें गुरुदत्त के सिनेमाई सृजन कार्य से जुड़ी घटना और प्रसंगों को विशेष महत्व दिया जाएगा ।

तृतीय अध्याय में गुरुदत्त निर्देशित फिल्में बाजी, जाल, आर-पार, मिस्टर एण्ड मिसेज 55, कागज के फूल, साहब बीबी और गुलाम में निहित कथ्य-प्रसंग को विषय वस्तु और सामाजिक दृष्टिकोण को आधार बनाकर अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय में प्यासा, कागज के फूल, साहब बीबी और गुलाम, मिस्टर एण्ड मिसेज 55, आर-पार, बाजी, जाल, के सिनेमाई शिल्प को विशेष रूप से पटकथा, सिनेमेटोग्राफी, प्रकाश प्रभाव, संपादन, साउंड डिजाइन, मंच व्यवस्था, गीत-नृत्य प्रस्तुति को आधार बना कर अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाएगा।

उपर्युक्त बातों के आधार पर गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों का अध्ययन और विश्लेषण किया जाएगा। शोध के दौरान दृष्टि में आए अन्य विषयों को भी शामिल करने की संभावना है। अध्ययन और विश्लेषण के आधार पर गुरुदत्त के सिनेमाई शिल्प की विशेषता, उपयोगिता और प्रासंगिकता पर दृष्टि डाली जाएगी।

उद्देश्य :

'गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों का शिल्पगत अध्ययन एवं विश्लेषण' का उद्देश्य उनकी फिल्मों के शिल्प के स्वरूप को समझना है। फिल्म निर्माण के रूप को गुरुदत्त की दृष्टि से देखकर उसका अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। रचना के उस स्वरूप को जानना और समझना जिसके आधार पर हम फिल्म निर्माण के इस अद्वितीय सृजन को समझ सके। जिसके अध्ययन के द्वारा हममें शिल्प के प्रति समझ पैदा हो सके जिसके आधार पर हमें फिल्मों को समझने और उस पर चिंतन करने में सहायता प्राप्त हो एवं गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों के शिल्प के अनेक पक्ष लोगों के सामने आ सके। अन्य शोधार्थियों के लिए यह शोध मार्गदर्शन का कार्य करे और जिसके माध्यम से विद्यार्थियों में सिनेमाई शिल्प के प्रति समझ पैदा की जा सके।

शोध प्रविधि :

सिनेमा शोध के विषय में कोई विशेष शोध प्रविधि का अभी निर्माण नही हो पाया है फिर भी शोध में निम्नलिखित शोध प्रविधि का प्रयोग किया जा सकता है।

- ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रक्रिया

- वैयक्तिक (एकल) अध्ययन पध्दति
- अवलोकन पध्दति
- साक्षात्कार
- समको का निर्वाचन एवं विश्लेषण पध्दति

संभावित अध्याय योजना

पृष्ठ संख्या

➢ **भूमिका**

अध्याय -1 सिनेमा का शिल्प

1.1 सिनेमाई शिल्प की अवधारणा
1.2 सिनेमाई शिल्प के तत्व
1.2.1 पटकथा
1.2.2 अभिनय प्रस्तुति
1.2.3 संवाद अदायगी
1.2.4 मीज-एन-सीन
1.2.5 मंच-सज्जा
1.2.6 वस्त्र-सज्जा एवं रूप-सज्जा
1.2.7 गीत-संगीत-नृत्य प्रस्तुति
1.2.8 छायांकन
1.2.9 प्रकाश-प्रभाव
1.2.10 संपादन
1.2.11 पार्श्व संगीत एवं ध्वनि प्रभाव
1.2.12 एनीमेशन एण्ड ग्राफिक डिजाइन

अध्याय -2 गुरुदत्त का जीवन परिचय

2.1 गुरुदत्त का प्रारम्भिक जीवन

2.2 फिल्मों में आने के बाद गुरुदत्त का जीवन

अध्याय -3 गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों में कथ्य प्रसंग

3.1 बाजी

3.2 जाल

3.3 आर-पार

3.4 मिस्टर एण्ड मिसेज 55

3.5 प्यासा

3.6 कागज के फूल

3.7 साहब बीबी और गुलाम

अध्याय -4 गुरुदत्त निर्देशित फिल्मों का शिल्पगत अध्ययन एवं विश्लेषण

4.1 प्यासा

4.2 कागज के फूल

4.3 साहब बीबी और गुलाम

4.4 मिस्टर एण्ड मिसेज 55

4.5 आर-पार

4.6 बाजी

4.7 जाल

- **उपसंहार**
- **संदर्भ ग्रंथ सूची**
- **फिल्मोंग्राफी**

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, प्रहलाद, प्यासा:चीर अतृप्त गुरुदत्त, मेघा बुक्स प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण-2012
2. उपाध्याय, सुरेन्द्र, कहानी प्रवृत्ति और विश्लेषण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर
3. ओझा,अनुपम, भारतीय सिने-सिध्दांत, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2009
4. कबीर, नसरीन मुन्नी, गुरुदत्त: हिन्दी सिनेमा का कवि, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010
5. खोपकर, अरुण, तीन अंकीय त्रासदी, मध्यप्रदेश डेवलपमेंट कॉपरेशन
6. गर्ग, उमा, संगीत का सौन्दर्य बोध, संजय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000
7. चढ़ढ़ा, मनमोहन, हिन्दी सिनेमा का इतिहास, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990
8. जोशी, मनोहर श्याम, पटकथा लेखन: एक परिचय राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2000
9. तिवारी, भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल इलाहाबाद
10. देशमुख, अंबादास, भाषिकी, हिन्दी भाषा तथा भाषा विज्ञान, अतुल प्रकाशन, ब्रह्म नगर, कानपुर
11. पांडे, राजेंद्र, पटकथा कैसे लिखे, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006
12. भारद्वाज, विनोद, सिनेमा: कल, आज, कल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990
13. मित्र, बिमल, बिछड़े सभी बारी-बारी, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण-2010
14. मिश्र, ब्रजवल्लभ, भरत और उनका नाटयशास्त्र, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1988
15. मुजावर, इसाक, गुरुदत्त: एक अशांत कलावंत, श्री विद्या प्रकाशन पुणे-1981

16.मृत्युंजय(संपा), सिनेमा के सौ बरस, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2008
17.राय, सत्यजित, चलचित्र: कल और आज, अनुवाद:योगेंद्र चौधरी, राजपाल प्रकाशन-1992
18.वाजपेयी कैलाश, आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प, आत्माराम एण्ड सन्स नई दिल्ली
19.शर्मा, कृपाशंकर, गुरुदत्त: अलौकिक प्रतिभावन्त, प्रतीक प्रकाशन पुणे 2012
20.सरन सत्या, गुरुदत्त के साथ एक दशक, राजपाल प्रकाशन, संस्करण-2011
21.सरन, सत्या, प्रवीण सिह (अनु.), गुरुदत्त के साथ एक दशक, राजपाल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण-2011
22.सिन्हा, कुलदीप, फिल्म निर्देशन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2007
23.Chawdhry, nirmal, how to write film screenplay, kanishka publishers, distributers, new delhi- first published- 2009
24.Doraiswamy, rashmi, guru dutt through light and shade legends of Indian cinema, publisher-wisdom tree-2008
25.Kabir, nasreen munni, documentary: in search of gurudutt-2011
26.Kabir, nasreen munni, guru dutt: a life in cinema, oxford university press-2010
27.Mascelli, josephu, the five C,s of cinematography, motion picture filming techniques silman-james press, los angeles
28.Pookuty, rosual, vijay tendulakar memorial lecture 13th international film festival of pune, 15th January 2013
29.Shyles, leonard, the art of video production, sage publications-2007
30.Villarejo, amy, film studies the basics, Routledge published, London- 2007

पत्र पत्रिकाएँ

1. प्रसाद, कमला(संपा), वसुधा, निरालानगर, भोपाल सिनेमा विशेषांक-2012।

2. यादव, राजेंद्र(संपा), हंस (हिन्दी सिनेमा के सौ साल), अक्षरा प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक-7, फरवरी-2013।

3. ओझा , सीमा (संपा), आजकल: साहित्य और संस्कृति, अंक-6, प्रकाशन नई दिल्ली, अक्टूबर-2012

4. मृत्युंजय(सं), सिनेमा के सौ बरस, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2006

वेबसाइट

www.wikipidiya.com

www.gurudatt.com

www.youtube.com

www.kamlashow.com

www.imdb.com

www.sscnet.ucla.edu

www.sunogane.in

http://cameraworking.raqsmediacollective.net

http://creative.sulekha.com